कानपुर, सोमवार
1 जुलाई 2019
नगर संस्करण
मूल्य ₹ 4.00
पृष्ठ 26

दैनिक जागरण

www.jagran.com

उत्तरप्रदेश, दिल्ली, मध्यप्रदेश, हरियाणा, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, पंजाब, जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और प. बंगाल से प्रकाशित

छात्रसंघों का अस्तित्व खत्म कर रही भाजपा : अखिलेश 13

'दंगल गर्ल' जायरा वसीम ने छोड़ा बॉलीवुड 1

ऑपरेशन से ही पित्त की थैली में पथरी का इलाज संभव

रीजेंसी हेल्थकेयर द्वारा आयोजित रीजेंसीकॉन कार्यक्रम में बोलतीं जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज की प्राचार्य डॉ .आरतीलाल चंदानी साथ में डॉ .एसएस सिंघल व डॉ .अतुल कपूर ● जागरण

जासं, कानपुर : गॉल ब्लाडर (पित्त की थैली) में पथरी का इलाज ऑपरेशन से ही संभव है। दूसरी पद्धति में इसका इलाज नहीं है, इसलिए भटकाव में न आएं। यह जानकारी रविवार को होटल रॉयल क्लिफ में आयोजित रीजेंसीकॉन में कैंसर (आंको) सर्जन डॉ. अभिमन्यु कपूर ने दी।

उन्होंने कहा गॉल ब्लाडर में पथरी के इलाज में लापरवाही से गॉल ब्लाडर कैंसर में परिवर्तित हो जाता है। स्पाइन सर्जन डॉ. हरप्रीत सिंह ने कहा कि छह हफ्ते तक लगातार पीठ दर्द बना रहे, दवा का सेवन करने पर भी आराम न मिले तो स्पाइन टीबी का संकेत है। रीजेंसीकॉन में आए विशेषज्ञों ने बीमारियों व इलाज पर मंथन किया। कार्यक्रम का उद्घाटन जीएसवीएम की प्राचार्य प्रो. आरती लालचंदानी ने किया। कार्यक्रम में नेत्र रोग विशेषज्ञ, ईएनटी, न्यूरो सर्जरी, बाल रोग, प्लास्टिक सर्जरी, हृदय रोग विशेषज्ञ, मूत्र रोग एवं गुर्दा रोग के सुपर स्पेशियलिटी विशेषज्ञों ने अपने क्षेत्रों के आधुनिक इलाज एवं तकनीक साझा की। इस दौरान रीजेंसी हेल्थ केयर के डायरेक्टर डॉ. अतुल कपूर, डॉ. रश्मि कपूर, डॉ. एसके भट्टर, डॉ. निर्मल पांडेय, प्रो. आइएन बाजपेई एवं न्यूरो सर्जरी विभागाध्यक्ष डॉ. मनीष सिंह डॉ. जयंत वर्मा, डॉ. राघवेंद्र जायसवाल, डॉ. अभिनीत गुप्ता एवं डॉ. एसके सिंह मौजूद रहे।

दी जानकारी

- रीजेंसीकॉन में जुटे विशेषज्ञों ने स्वास्थ्य एवं इलाज पर किया मंथन
- इलाज में लापरवाही बरतने से हो सकता है गॉल ब्लाडर कैंसर

6 हफ्ते पीठ दर्द तो स्पाइन टीबी का खतरा

PIC: DAINIK JAGRAN INEXT

रीजेंसीकॉन में जुटे एक्सपर्ट्स ने की हेल्थ और ट्रीटमेंट की नई टेक्नोलॉजी पर बात

kanpur@inext.co.in

KANPUR (30 June): अगर पीठ में दर्द लगातार है और दवा खाने के बाद भी आराम नहीं मिल रहा तो यह स्पाइन की दूसरी बीमारियों की तरफ इशारा है. जिसमें सबसे कॉमन है स्पाइन की टीबी.अगर छह हफ्तों तक पीठ में दर्द बना रहे और दवा खाने के बाद भी आराम न मिले तो यह स्पाइन की टीबी होती हैं. संडे को रिजेंसीकान में आए स्पाइन सर्जन डॉ.हरप्रीत सिंह ने यह जानकारी दी.

दीप जलाकर किया गया रीजेंसीकॉन का इनॉग्रेशन.

नई तकनीक पर चर्चा

संडे को रीजेंसी हॉस्पिटल की ओर से आयोजित रीजेंसीकॉन में आए विशेषज्ञों ने अलग अलग बीमारियों, उनके ट्रीटमेंट और नई तकनीक पर चर्चा की. रीजेंसीकॉन का उदघाटन मेडिकल कॉलेज प्रिंसिपल डॉ.आरती लालचंदानी ने दीप जलाकर किया. इस दौरान रीजेंसी हेल्थकेयर के डायरेक्टर डॉ.अतुल कपूर, डॉ.रश्मि कपूर भी मौजूद रही. आंको सर्जन डॉ.अभिमन्यु कपूर ने गालब्लेडर कैंसर के बारे में विस्तार से जानकारी दी. कार्यक्रम के दौरान डॉ.एसके भट्टर, डॉ.निर्मल पांडेय, डॉ.जयंत वर्मा, डॉ. राघवेंद्र जायसवाल, डॉ.अभिनीत गुप्ता, डॉ.एके सिंह, डॉ.आईएन बाजपेई, डॉ.मनीष सिंह, डॉ. सपन गुप्ता प्रमुख रूप से मौजूद रहे.

कानपुर। सोमवार • 1 जुलाई • 2019

राष्ट्रीय सहारा | www.rashtriyasahara.com |

लौह पुरुष व हमारे आदर्श सरदार पटेल को समर्पित स्टेच्यू ऑफ यूनिटी के कई हिस्सों में पहली बारिश में ही पानी का रिसाव होना सरकार व एजेंसियों की लापरवाही व नाकामी का सबूत है।

—— रणदीप सिंह सुरजेवाला@rssurjewala

रीजेन्सीकॉन में हुयी जटिल बीमारियों पर चर्चा

कानपुर। रीजेन्सी हेल्थ केयर के रविवार को स्वरूप नगर स्थित होटल रायल क्लिफ में रीजेन्सीकॉन-2019 कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि मेडिकल कालेज की प्राचार्या डॉ. आरती लाल चंदानी और सीनियर कार्डियोलाजिस्ट डॉ. एसएस सिंघल ने किया। इस मौके पर जटिल बीमारियों पर चर्चा वरिष्ठ चिकित्सकों ने की। कार्यक्रम में बताया गया कि अब किसी भी जटिल बीमारी के इलाज के लिये बाहर नहीं जाना पड़ेगा। मरीजों को सभी सुविधायें रीजेन्सी हास्पिटल में ही उपलब्ध होंगी। कार्यक्रम में आप्थैल्मोलाजी, ईएनटी, डरमैटोलाजी, पीडियाट्रिक, प्लास्टिक सर्जरी, न्यूरोमेडिसिन, कार्डियक साइंस आदि के वरिष्ठ चिकित्सक कार्यक्रम में मौजूद रहे। चेयरपरसन डॉ. रश्मि कपूर ने सभी को धन्यवाद दिया। कार्यक्रम आयोजकों में डॉ. एसके भट्टर, डॉ. रजनीश बाजवा, डॉ. हर्ष अग्रवाल, डॉ. निर्मल पाण्डेय, डॉ. जयंत वर्मा, डॉ. अभिमन्यु कपूर, डॉ. अजमल हसन, डॉ. अजीत तिवारी, डॉ. राघवेन्द्र जायसवाल, डॉ. निर्भय सिंह के बेहतर आयोजन पर सराहना हुयी।

6 हफ्ते से अधिक कमर दर्द पर स्पाईन टीबी का खतरा

❑ सीने में दर्द पर हार्ट ही नहीं बल्कि गैस की समस्या भी संभव,रहें सतर्क

कानपुर,30 जून। छह सप्ताह से अधिक कमर दर्द की शिकायत को स्पाईन(रीढ़ की हड्डी) टीबी की ओर स्पष्ट संकेत है। जबकि सीने में दर्द पर हार्ट ही नहीं बल्कि गैस की समस्या से इंकार नहीं किया जा सकता है। जबकि पित्त की थैली में पथरी को नजरअंदाज करने से अन्य गंभीर समस्यायें आना तय है। इस लिये सतर्क रहने की आवश्यकता है। उक्त तथ्य होटल रॉयल क्लिफ में रीजेंसी हास्पिटल के तत्वाधान में आयोजित संगोष्ठी 'रीजेंसीकॉन' में डाक्टरों के बीच चर्चा के दौरान उभर कर सामने आये। रीजेंसी हास्पिटल के स्पाईन सर्जन डा हरप्रीत सिंह ने बताया कि विश्व में टीबी के मामले में देश सबसे आगे है। जिसके चलते अक्सर टीबी के बैक्टीरिया का संक्रमण रीढ़ की हड्डी में हो जाता है। परिणाम स्वरूप कमर दर्द ,बुखार,हांथ-पैरों में झुनझुनाहट एवं चलने फिरने में लड़खड़ाहट के साथ स्पाईन टीबी से इंकार नहीं किया जा सकता है। उन्होने बताया कमर दर्द पर सतर्क रहने की आवश्यकता है। छह माह तक कमरदर्द जो दवाओं से ठीक नहीं हो रहा हो तो स्पाईन टीबी की ओर स्पष्ट संकेत है। एक सरे में स्पाईन टीबी पकड़ में नहीं आती। एमआरआई के जरिये रीढ़ की हड्डी की टीबी का पता कर समय रहते कारगर इलाज उपलब्ध है। अन्यथा परेशानियां तय हैं। रीजेंसी हास्पिटल के इंटरवेंशन कार्डियोलॉजिस्ट डा अभिनीत गुप्ता के मुताबिक आराम करते समय भी यदि सांस की समस्या,सीने में भारीपन-दर्द एवं पसीना की शिकायत हार्ट की समस्या की ओर इशारा करता है। यह समस्या गैस की वजह से भी हो सकती है। लेकिन इसका अनुमान खुद मत लगाये। एसी स्थित में चिकित्सकीय परीक्षण के साथ इसीजी आदि जांच करा कर इलाज करायें। उन्होने बताया कि यदि परिवार में हार्ट ,डायबिटीज एवं बीपी की बीमारी किसी को हो तो स्वंम को हार्ट की बीमारियों के प्रति सतर्क रहने की आवश्यकता है। रीजेंसी के गैस्ट्रो एवं जीआई आंको सर्जन डा अभिमन्यू कपूर ने बताया कि पित्त की थैली की समस्या उत्तर भारत में सर्वाधिक है। इसका इलाज सिर्फ आपरेशन ही है। इस लिये पित्त की थैली की समस्या को लम्बे समय तक नजरअंदाज मत करें। अन्यथा पैंक्रियाज,पित्त की थैली एवं लिवर कैंसर की सम्भावनाओं से इंकार नहीं किया जा सकता है। रीजेंसी के च्वाइंट रिप्लेसमेंट सर्जन डा राघवेंद्र जायसवाल ने बताया कि घुटना प्रत्यारोपण,एचटीओ एवं अन्य विधियों द्वारा मरीजो को आर्थराईटिस से राहत दिलाने के लिये अलग अलग पैरामीटर्स है। इस लिये उपरोक्त समस्या पर डाक्टर ही बेहतर निर्णय ले सकते हैं। संगोष्ठी के दौरान आथ्थैलमालॉजी, ईएनटी, न्युरो सर्जरी, न्युरोमेडिसिन, प्लास्टिक सर्जरी आदि के वरिष्ठ चिकित्सकों ने अहम जानकारियां प्रदान कीं। रीजेंसीकॉन का शुभारंभ मुख्य अतिथि जीएसवीएम प्रचार्या प्रोफेसर डा आरती लालचंदानी,सीनियर कार्डियोलॉजिस्ट डा एस एस सिंघल एवं रीजेंसी हास्पिटल के निदेशक डा अतुल कपूर ने दीप प्रज्जवलित कर किया। संगोष्ठी के दौरान चिकित्सकों को सम्मानित किया गया। प्रमुख रूप से डा रश्मि कपूर,डा एस के भट्टर,डा अनुराग बाजपेयी,डा रिषी शुक्ला,डा रजनीश बाजवा,डा हर्ष अग्रवाल,डा निर्मल पाण्डेय,डा जयंत वर्मा,डा अजमल हसन,डा निर्भय कुमार आदि मौजूद रहे।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते डाक्टर अतुल कपूर।

■ पित्त की थैली में पथरी को नजर अंदाज करना गंभीर समस्याओं को दावत